जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

सामनुस्मर युद्धय च
जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ

शेखावाटी सन्मार्ग

भारत सरकार पंजीयन नं. : 72322/91

सतीनां वै सतांचैव दातृणां विदुषां तथा।
आकरं गुण शीलानां लक्ष्मणदुर्गं मनोहरम्।।

नमोस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोस्तु रुद्रेन्द्र यमानिलेभ्यो नमोस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः।।

Mob: 9828665353
Web: www.srrividya.com

पाक्षिक । वर्ष–32 । अंक–12 । लक्ष्मणगढ 01 अप्रेल 2023 । मूल्य (विशेषांक सहित) 100 रु. वार्षिक ।

सक्षम और सतेज संघटन ही भारत राष्ट्र को सर्वतन्त्र स्वतन्त्र और जगद्गुरु के पद पर प्रतिष्ठित कर सकता है

लक्ष्मणगढ़ | 23 मार्च (निजसंवाददाता) |गौड़ ब्राह्मण महासभा द्वारा आयोजित नव संवत्सर अभिनन्दन एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक श्री केशवराव बलिराम हेडगेवार जयन्ती का शुभारम्भ श्रीमुरलीमनोहर मन्दिर के सामूहिक श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन गायन के मंगलाचरण से हुआ | मुख्य अतिथि विप्र कल्याण बोर्ड के सदस्य पवन कुमार बूंटोलिया ने डॉ. हेडगेवार को श्रद्धांजलि देते हुये कहा कि धर्म के आधार पर सन् 1947 में भारत का विभाजन होने के बाद अस्तित्त्व में आया हिन्दुस्तान 'हिन्दू राष्ट्र' ही है – उसे हिन्दू राष्ट्र बनाने की बात कोई मायने नहीं रखती | यह तो है ही हिन्दू राष्ट्र | प्रारम्भ में अपने स्वागत भाषण में गौड़ ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष आचार्य नटवरलाल जोशी कहा नववर्ष प्रतिपदा मत्स्यावतार की मन्वादि तिथि है | डॉ. हेडगेवार का पुण्य स्मरण करते हुये उन्होंने कहा – तत्कालीन परिस्थितियों का आकलन कर उन्होंने वहां 'हिन्दुओं का सबल – सक्षम और सतेज संघटन ही भारत राष्ट्र को सर्वतन्त्र स्वतन्त्र और जगद्गुरु के पद पर प्रतिष्ठित कर सकता है | क्योंकि संघटन ही शक्ति है और इसी संकल्प से उन्होंने 'विजयादशमी' सन् 1925 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना की जो आज 'हिन्दुस्तान का ही नहीं समस्त विश्व का संख्यात्मक एवं गुणात्मक दोनों दृष्टियों से सबसे विशाल और सक्रिय संघटन है | समारोह में अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर चाकलान, रतनगढ़ मुख्य अतिथि एवं शेखावाटी सन्मार्ग के सम्पादक श्री शशिकान्त जोशी तथा सभी अतिथियों एवं महासभा के अध्यक्ष आचार्य नटवरलाल जोशी ने श्रीविद्या पंचांग का लोकार्पण किया | इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट उपलब्धि के लिये इन विशिष्ट समाज सेवियों का दुपट्टा पहनाकर, श्रीफल एवं सम्मान पत्र देकर सम्मान भी किया गया | श्री नन्दकिशोर चाकलान (साहित्य), श्री पवन कुमार बूंटोलिया, पूर्व उप निदेशक जनसंपर्क विभाग – राजकुमार पारीक, श्रीराम शर्मा, राजकुमार खीरवेवाला, विष्णु भूत, अशोक पुजारी, गणनाथ मिश्र – (समाज सेवा), डॉ. रेखा शर्मा, पूर्व प्राचार्य आशकरण शर्मा, पवन गोयनका – (शिक्षा), बाबूलाल सैनी, (पत्रकारिता), हरि बहड़ – (संगीत) का सम्मान भी किया गया | अर्जुन अवार्डी सुरेश मिश्र, छगन शास्त्री, प्रभुदयाल इन्दौरिया, राघव पत्रकार कवि सुरेश बांगड़ ने भी डॉ. हेडगेवार को श्रद्धांजलि दी | अपने अध्यक्षीय भाषण में नन्दकिशोर चाकलान ने नवसंवत्सर की महता पर प्रकाश डाला और राष्ट्र जागरण के लिए डॉ. हेडगेवार को प्रेरणा पुंज बताया और राष्ट्र जागरण की अपनी कविता पढ़ी | मन्दिर के महन्त पुष्पेन्द्र शुक्ल ने नीम की कोंपल – कालीमिर्च, इलायची, बादाम आदि से बना प्रसाद बांटा | कार्यक्रम का सफल संयोजन गौड़ ब्राह्मण महासभा के कमलेश मिश्र ने किया |

ऐतिहासिक भगवा रैली का हुआ आयोजन

लक्ष्मणगढ़ 26 मार्च(निजसंवाददाता)। हिंदू समाज की एकता, समरसता एवं स्वाभिमान के संवाहक सर्व हिंदू समाज द्वारा सामाजिक उत्तकर्ष एवं प्रवाह को नित सामर्थ्य प्रदान करने की दिशा में विशाल भगवा रैली का आयोजन किया गया। भगवा रैली आयोजन समिति के तत्वावधान में आयोजित इस विशाल रैली के आयोजन से अपने धर्म संस्कृति के आदर्शों, परंपराओं एवं अस्मिता को अक्षुण बनाए रखने की दिशा में नव संकल्पों के उद्घोष का एक सार्थक प्रयास सिद्ध हुआ। सबने एकजुट होकर हिंदू चेतना एवं उत्त्साह की नव धारा का सूत्रपात इस विशाल रैली के माध्यम से किया।

घंटाघर स्थित नगर धणी रघुनाथ जी के मंदिर से आरंभ हुई रैली बस स्टैंड, पुरानी तहसील, चौपड़ बाजार, मुरलीमनोहर जी के मंदिर, पक्की प्याऊ, कबूतरिया कुआं, मुख्य पोस्ट ऑफिस, एक्सिस बैंक होते हुए पुन: घंटाघर पहुंचकर विसर्जित हुई।

रामनवमी पर्व पर निकाली श्रीराम जी की भव्य शोभायात्रा

लक्ष्मणगढ़ 30 मार्च (निजसंवाददाता) |कस्बे में गुरुवार को लक्ष्मणगढ़ नागरिक परिषद् की ओर से रामनवमी पर्व परभगवान् राम की शोभायात्रा निकाली गई। रघुनाथजी बड़ा मंदिर से महंत अशोकदास महाराज के सान्निध्य में शुरू हुई शोभायात्रा कस्बे के निर्धारित मुख्य मार्गों से होकर गुजरी। डॉ. निरुपमा उपाध्याय के नेतृत्व में कलशधारण किए हुए महिलाएं चल रही थी |जबकि मध्य में भजन मण्डली में शामिल लोककलाकार मनोज पाण्डेय, बनवारी वेदी, विकास मिश्र, रामचन्द्र नारनौलिया, रामस्वरूप सैनी, मनीष सेन सहित अन्य कलाकार भजनगाते हुए चल रहे थे। भगवान् राम की प्रतिमा को रथारूढ़ किया गया था। शोभायात्रा में कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा, भाजपा नेता दिनेश जोशी, प्रधान मदन सेवदा, नगर पालिका अध्यक्ष मुस्तफा कुरैशी, उपाध्यक्ष बनवारी पाण्डेय, आचार्य नटवरलाल जोशी,पवन कुमार बूंटोलिया, डालूराम चाहर आदि ने नगर आराध्य रघुनाथ जी की आरती उतारी |

सम्पादकीय

" सन्मार्ग एव सर्वत्र पूज्यतेनाऽपथ: क्वचित् "

मूल- विद्या

श्रीविद्या के मूल मन्त्र को पञ्चदशाक्षरी कहा जाता है। यह गोपनीय है और श्री गुरुमुख से ही इसे प्राप्त करना चाहिए। इसमें तीन कूट हैं, प्रथम कूट का नाम वाग्भवकूट है, इसके द्वारा ज्ञान-विज्ञान एवं पराविद्या की प्राप्ति होती है, दूसरे कूट का नाम कामराजकूट है और इसके द्वारा सकल अभिलाषाओं की पूर्ति होती है, तीसरे कूट का नाम शक्तिकूट है, जिसके द्वारा सकल पुरुषार्थ की प्राप्ति होती है, अतः यह मन्त्र जगदम्बा का सूक्ष्म स्वरूप है। जब हम पिण्डाण्ड को श्रीचक्र के रूप में देखते हैं और मन्त्र की आराधना करते हैं तो मानव शरीर में सिर से लेकर गर्दन तक का भाग प्रथम कूट, गर्दन से कमर तक का भाग द्वितीय कूट और कमर से नीचे के भाग को तृतीय कूट से सम्बद्ध मानते हैं। इसीलिए ललितासहस्रनाम में जगदीश्वरी को 'कूटत्रयकलेवरा' कहा गया है। इन तीनों कूटों का अन्त मायाबीज से ही होता है। परब्रह्मस्वरूप पूज्यपाद स्वामी करपात्री जी महाराज के अनुसार "श्रीविद्या के तीन कूट हैं- (१) वाग्भव (२) कामराज (३) शक्ति । ये प्रत्येक व्यष्टि-समष्टि भेद से चार प्रकार के हैं। इनके चार बीज हैं जिनकी सृष्टि, स्थिति, संहार और अनाख्या रूप से भावना की जाती है। इन्हें ही ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञान और इनका सामरस्य अथवा अग्निचक्र, सूर्यचक्र, चन्द्रचक्र और ब्रह्मचक्र अथवा मित्रीशनाथ, षष्टीशनाथ, उड्डीशनाथ और चर्यानन्दनाथ अथवा जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय, वामा, ज्येष्ठा, रौद्री और शान्ता, इच्छा, ज्ञाना, क्रिया और अम्बिका, कामेश्वरी, वज्रेश्वरी, भगमालिनी और महात्रिपुरसुन्दरी, आत्मा, अन्तरात्मा, परमात्मा और ज्ञानात्मा, आत्मतत्त्व, विद्यातत्त्व, शिवतत्त्व और सर्वतत्त्व, कामरूप, पूर्णगिरि, जालन्धर और ओड्याणपीठ, प्रागन्वय, दक्षिणान्वय, पश्चिमान्वय और उत्तरा- न्वय है। ये समय और आम्नाय पद से भी कहे जाते हैं। स्वयंभू, बाड़, इतर और पर, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी और परा है। पुट-धाम-तत्त्व-पीठ-अन्वय- लिङ्ग-मातृका तथा इनकी समष्टिरूप से भी इन चार बीजों का चिन्तन (मनन) करना चाहिए।

पञ्चकर्मों में सृष्टि, स्थिति और संहार से तीनों कर्म प्रत्येक तीन-तीन प्रकार के हैं। वे हैं- (१) सृष्टि सृष्टि, (२) सृष्टि स्थिति, (३) सृष्टि संहति तथा (१) स्थिति सष्टि (२) स्थिति स्थिति (३) स्थिति संहृति और (१) संहति सृष्टि (२) संहति स्थिति (३) संहति संहति । अपनी-अपनी शक्ति के सहित ब्रह्मा आदि इन तीनों कर्मों के अधिपति हैं। प्रथम कूट में क ब्रह्मा, त्रिकोणा भारती, तुरीय स्वर (कामकला) विष्णु, ल पृथ्वी, ह रुद्र, र रुद्राणी, दीर्घीकार शान्ता- म्बिकात्मक मिथुन, द्वितीय हकार को छोड़कर शेष में प्रथम कूट की ही रोति जाननी चाहिए इस त्यक्त हकार को तृतीय कूट में ब्रह्मरूप साकार को भारती रूप से जानना चाहिए। शेष की व्याख्या पूर्ववत् समझनी चाहिए। प्रथम कूट में हल्लेखान्तर्गत कामकला में निविष्ट सपरार्धकला तुरीय विन्दुरूपा है। उस बिन्दु से मुख और बिन्दुद्वय से कुच और सपरार्ध से योनि समझनी चाहिए। इसे ही वह्निकुण्डलिनी कहा जाता है। द्वितीय कूट में वही सूर्यकुण्डलिनी तथा। तृतीय कूट में सोमकुण्डलिनी है। दीपशिखाग्रवर्ती कज्जल रेखा के समान बिन्दु आदि नव का समष्टिरूप नाद यहीं से उत्पन्न होता है।

अनाहत से प्रारम्भ होने वाले नाद में त्रिविध सृष्टि की भावना करनी चाहिए, जो कि त्रैलोक्य-मोहनचक्र (१) सर्वाशापरिपूरकचक्र (२) आर सर्व-संक्षोभणचक्र रूप है।

भ्रूमध्य से उत्थित नाद में त्रिविध स्थिति की भावना करनी चाहिए, जो कि (१) सर्वसौभाग्यदायकचक्र (२) सर्वार्थसाधकचक्र और (३) सर्वरक्षाकर- चक्ररूप हैं। बिन्दुस्थान से उत्थित नाद में त्रिविध संहार की भावना करनी चाहिए, जो कि (१) सर्वरोगहर (२) सर्वसिद्धिप्रद और (३) सर्वानन्दमयचक्र- रूप है।

बाह्येन्द्रिय से जहाँ व्यवहार होता है उसे जागर अवस्था कहा जाता है। जागरावस्था के व्यवहार के कारणभूत ज्ञान की भावना तृतीय कूट के हल्लेखा-स्थित रेफ में करनी चाहिए।

बाह्येन्द्रियानपेक्ष अन्तःकरण से व्यवहारवाली अवस्था स्वप्नावस्था है। स्वानिक व्यवहार के हेतुभूत ज्ञान की भावना उस हृल्लेखास्थित कामकला में करनी चाहिए। गलस्थ द्वितीय कूटस्थित लकार में स्वप्नावस्था का चिन्तन करना चाहिए।

सुषुप्तिवृत्ति सामान्याभाव अथवा अविद्यावृत्तिरूपा है। वह ललाट स्थान में है । वहाँ तृतीयकूटस्थ हल्लेखास्थ बिन्दु में उसकी भावना करनी चाहिए। चिदभिव्यञ्जक नाद का ज्ञान ही तुरीयावस्था है, उसके हेतुभूत ज्ञान की भावना अर्धचन्द्ररोधिनी और नाद में करनी चाहिए। मनोवचनातीत प्रत्यगानन्दघन ही तुरीयावस्था है। नादान्तादि पञ्चक में उसी की भावना होती है। तृतीयकूटस्थ हल्लेखा में स्थित (१) रेफ (२) बिन्दु (३) रोधिनी (४) नादान्त और (५) व्यापिका में चन्द्रकलातुल्य पाँच शून्यों की भावना करनी चाहिए। षष्ठ महाशून्य का चिन्तन उन्मनी में करना चाहिए।

इस प्रकार पाँच अवस्था, छः शून्य, सात विषुव, नव चक्र और मनोरथों का स्मरण करते हुए श्रीविद्यागत वर्णों का उच्चारण ही जप कहा जाता है।

सात विषुव हैं- (१) प्राणविषुव (२) मन्त्रविषुव (३) नाड़ीविषुव (४)प्रशान्तविषुव (५) शक्तिविषुव (६) कालविषुव और (७) तत्त्वविषुव ।

प्राण, आत्मा और मन का संयोग प्राणविषुव है। प्राथमिक कूट के नाद में व्यष्टि-समष्टि भेद से चारों बीज और प्रत्यगात्मा के ऐक्य से नादमयता की भावना मन्त्रविषुव है। मूलाधार ले लेकर छः चक्रों में प्रतिचक्र के ऊपर और नीचे एक-एक ग्रन्थि है। इस तरह १२ ग्रन्थियाँ हुईं। उन ग्रन्थियों का भेदन करके ही सुषुम्ना नाड़ी मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र तक व्याप्त रहती है। उसी मार्ग से नाद और वर्ण सुषुम्ना संयुत रूप में भावना नाड़ीविषुव है। तृतीयकूटस्थ हृल्लेखास्थ रेफादि सात स्थानों में आधार से चले हुए नाद का उत्तरोत्तर क्षणों में कांस्य तालादिध्वनि के समान सूक्ष्मता का तारतम्य अन्त में शक्ति में लीन होने की भावना, प्रशान्तविषुव है। समना में नाद का पुनः सञ्जीवन होता है किन्तु वह सूक्ष्मतर होता है। उन्मनी में उसका पुनः विलय कालविषुव है। अकुल सहस्रार से लेकर उन्मनी पर्यन्त स्थित ककारादि उन्मनान्त श्रीविद्या के तीनों कूटों के आलयों में दश हजार आठ सौ सत्रह त्रुटि पर्यन्त श्रीविद्या के अवयवों से सम्बद्ध नाद का उच्चारण करने पर तत्त्व और संविद का अभेद बोध होता है। इसे तत्त्वविषुव कहते हैं।"

इस प्रकार त्रिपुरार्णव, वामकेश्वरतन्त्र में त्रिपुरा के सन्दर्भ में अभि- व्यक्त भाव भगवान् भाष्यकार की लेखनी से परिपुष्ट हो जाते है। महर्षि क्रोध- भट्टारक दुर्वासा भी इन्हीं कारणों से पराम्बा को 'त्रिपुरे' तथा 'त्रिलोकी महा- सौन्दर्यार्णव' एवं 'त्रिलोकनिलय' की संज्ञा देते हैं । २

त्रिपुरा का एक आशय यह भी है कि पराम्बा राजराजेश्वरी ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश की त्रिमूर्ति से भी पुरातन हैं, अतः वे त्रिपुरा हैं तथा इडा, पिंगला तथा सुषुम्ना इन तीनों नाड़ियों का रूप होने से भी वे त्रिपुरा कहीं जाती हैं। मन, बुद्धि, चित्त निवासिनी होने के कारण भी उन्हें त्रिपुरा की संज्ञा दी गई है।

शशिकान्त जोशी
सम्पादक

शेखावाटी सन्मार्ग पत्र के पर्यटन विशेषांक 'धरती धोरां री' का लोकार्पण

लक्षणमगढ़। 26 मार्च (निजसंवाददाता)। यहां से प्रकाशित शेखावाटी सन्मार्ग समाचार पत्र के पर्यटन विशेषांक का रविवार को शेखावाटी के झुंझुनूं जिला मुख्यालय तथा मंडावा व नवलगढ़ कस्बों में समारोह पूर्वक लोकार्पण किया गया।

झुंझुनूं - स्थित अरविंद पब्लिक स्कूल में आयोजित समारोह में किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. दिलीप मोदी ने कहा कि आज पर्यटन उद्योग देश में उतरोत्तर प्रगति कर रहा है। जिससे देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होने के साथ साथ रोजगार के अवसर भी सृजित हो रहे हैं। हम सबको मिलकर शेखावाटी को पर्यटन जनपद के रूप में विकसित करना होगा शेखावाटी सन्मार्ग के संरक्षक आचार्य नटवर लाल जोशी ने बताया कि यह समाचार पत्र पिछले इकतीस वर्षों से प्रकाशित हो रहा है। इस वर्ष पर्यटन उद्योग को गति प्रदान करने और उसका विकास एवम् उसकी संबावनाओं के मध्य नजर यह पर्यटन विशेषांक विशेष रूप से तैयार किया गया है। समारोह में भाजपा नेता विश्वंभर पुनियां, सीए लोकेश अग्रवाल, भाजपा मंडल अध्यक्ष कमलकांत शर्मा, दिलीप भारद्वाज, पूर्व जन संपर्क अधिकारी राजकुमार पारीक ,डा सुरेश कड़वासरा ,रेसला के कार्यकारी प्रदेशाध्यक्ष प्रमेंद्र कुल्हार,रतिराम धींवा आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।कार्यक्रम का संचालन हिंदी व्याख्याता सत्यनारायण शर्मा और डा रवींद्र कुमार भोजक ने किया।

मंडावा -होटल राधिका हवेली में 'धरती धोरां री' पुस्तक का विमोचन ऋषिकुल के सेवानिवृत्त प्राचार्य एवं शिक्षाविद् लक्ष्मणगढ़ निवासी आचार्य नटवरलाल जोशी के मुख्य अतिथि में शशिकांत जोशी द्वारा लिखित 'धरती धोरां री' पुस्तक का विमोचन किया गया । इस दौरान उन्होंने कहा कि शेखावाटी में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पुस्तक कारगर साबित होगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजसेवी बजरंग लाल धाभाई ने की। सेवानिवृत्त सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी राजकुमार पारीक बतौर अतिथि मौजूद थे । इस दौरान पुस्तक का परिचय कराते हुए सुभाष बावलिया, बजरंग लाल धाभाई, नटवरलाल जोशी ने पुस्तक के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम के दौरान पत्रकार रामस्वरूप भूतिया, मधुसूदन खेमानी, संदीप शर्मा, मोहनलाल सैनी, गोविंद राम जोशी, रविंद्र शर्मा, दुर्गेश शर्मा, विजय देवड़ा , राजेंद्र जोशी, योगेश शर्मा, सुखदेव सिंह, विष्णु जोशी, मोतीलाल जोशी, विजय शाह, गोपाल केडिया , महावीर थलिया, लाल चंद देवड़ा, यूसुफ गाइड सहित अनेक लोग मौजूद थे। शेखावाटी सन्मार्ग के संपादक शशिकान्त जोशी ने कार्यक्रम में पधारे सभी महानुभावों का आभार जताया।

नवलगढ़ – रविवार को मिट्ठू की धर्मशाला में शेखावाटी सन्मार्ग के विशेषांक 'धरती धोरां री' का समारोहपूर्वक लोकार्पण किया गया । कार्यक्रम रामनारायण शास्त्री की अध्यक्षता में हुआ | मुख्य अतिथि आनंद सिंह शेखावत एवं विशिष्ट अतिथि कैलाश चौटिया व राजकुमार पारीक थे। मंच का संचालन मुरारीलाल इन्दौरिया ने किया ।धन्यवाद ज्ञापन सुशील मुरारका ने दिया।

धूमधाम से मनाया
फतेहपुर का 573वां स्थापना दिवस

फतेहपुर (निजसंवाददाता) । फतेहपुर 572 वर्ष पूरे कर चुका है और धूमधाम के साथ 573वां स्थापना दिवस उत्साह एवं समारोह के साथ मनाया गया |

इस उपलक्ष्य पर रविवार को विभिन्न सांस्कृतिककार्यक्रमों का आयोजन होटल हवेली मेंहुआ | इस अवसर पर दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। सुबह सवा सात बजे निमावत पब्लिक स्कूल में सद्भावना मैत्री क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया | उन्होने बताया कि आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में सोनी टीवी चैनल पर सिंगर में गोल्ड मेडल विजेता थानु खान बॉलीवुड एवं राजस्थानी गानों की प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर राजस्थानी गायिका नन्दिनी त्यागी, लोक नृत्यांगना शहनाज फोगा, हास्य कवि हरीश हिन्दुस्तानी तथा शिक्षा विभाग की टीम की ओर से भैरुंजी नृत्य तथा राजलदेसर की टीम की ओर से चंग ढप की प्रस्तुति दी गई।

हिसार से आए नबाब फतेह खां ने फतेहपुर कस्बे की स्थापना करके यहाँ पर काफी वर्षो तक शासन किया एवं अपने शासन के दौरान नबाब फतेह खां ने कौमी एकता की एक अनूठी मिशाल के साथ इस कस्बे को सौहार्द पूर्ण एवं सभी कौमों को साथ लेकर कस्बे को बसाया था। नबाब फतेह खां की ओर से यहा के साधु संतो एवं पीर पैगम्बरों को एक समान दर्जा दिया |

इनमें वे यहाँ के तत्कालीन संत शिरोमणी गंगानाथ जी महाराज के अटूट शिष्य रहे एवं समय समय पर गंगानाथ जी के दर्शन करने के लिए भी उनके तपो स्थल पर पहुंच कर मार्ग दर्शन के साथ-साथ दर्शन करते थे।

उसके बाद भी मेरे वंशजों ने मेरी ओर विकास की दृष्टि से कभी नहींदेखा मेरे बाद में बसे शहर कस्बों से मैं आज विकास की दौड़ में सबसे अधिक पिछड़े हुए की श्रेणी में आता हूं, जरा भर भी मेरी आत्मा को टटोलने का किसी ने भी प्रयास नहीं किया। मेरे हद्य स्थल पर चार सौ साल से भी अधिक पुराना लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर है तो सीकर रोड़ के समीप बद्रीनाथ जी मंदिर है तथा पीर निजामूदीन चिस्ती की दरगाह एवं दक्षिण में बुधगिरी बाबा की मढी है | मैने धार्मिक भावनाओं को आत्मसात करते हुए, इस कस्बे की परवरिश की लेकिन मुझे क्या मिला | अपने आत्म चितंन करके अपने अतीत स्थापना दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम हुए |

मुख्य स्थलों से निकली ईसर गणगौर की सवारी

लक्ष्मणगढ़ 24 मार्च (निजसंवाददाता)। अध्यक्ष अनिल मिश्र, सचिव ललित भूत के नेतृत्व में यहां महावीर सेवा समिति सेठों के बाजार से प्रतिवर्ष निकाली जाने वाली ईसर गणगौर की शोभायात्रा शुक्रवार को परम्परागत रूप से निकली।

जनप्रतिनिधियों, व्यापारियों व प्रबुद्धजनों ने ईसर गणगौर की आरती की तथा आरती के बाद शोभायात्रा मुरलीमनोहर मंदिर, पक्की प्याऊ, कबूतरिया कुवा, लाल कुवा,न्यामा बाजार, ईदगाह मस्जिद, केसरिया कंवर,बस स्टैंड, चौपड़ बाजार होती हुई रामलीला मैदान पहुंची। इस दौरान गणगौर माता की नवविवाहिताओं द्वारा पूजा अर्चना की | रामलीला मैदान में मेले का आयोजन किया गया जिसमें रियायती दर पर फास्टफूड की स्टाल लगाई गई। इस अवसर पर लक्षमनगढ विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी रहे दिनेश जोशी, नगरपालिका अध्यक्ष मोहम्मद मुस्तफा कुरैशी उपाध्यक्ष बनवारी पाण्डेय राजस्थान राज्य विप्र कल्याण बोर्ड के सदस्य वरिष्ठ पार्षद समाजसेवी पवन बूटोलिया पूर्व पालिका अध्यक्ष हरिप्रसाद पुजारी, नगरपालिका में नेता प्रतिपक्ष एडवोकेट ललित पुरोहित शहर भाजपा अध्यक्ष मधुसूदन दायमा, सीकर जिला क्रिकेट एसोसिएशन के उपाध्यक्ष बाबूलाल सैनी,बगडिया स्कूल सचिव पवन गोयनका, अर्जुन पुरस्कार विजेता सुरेश मिश्र, आचार्य नटवरलाल जोशी राज्यपाल शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित छगन शास्त्री, राजकुमार खीरवेवाल, नरोत्तम ब्यास, प्रमोद मंगलूणेवाला वाला जयप्रकाश सरावगी, दीपक जाजोदिया,विमल चिराणिया,अनिल चिराणिया, सतीश पाटोदा,रामस्वरूप सोमानी,जयशंकर पंडित, अमित शर्मा, नवीन शर्मा, गोपाल लाटा,आत्माराम मिश्र, शशिकांत पुजारी, प्रभाष नारनोलिया, पवन निर्मल, मुकेश कुमावतसहित बड़ी संख्या में प्रबुद्धजन मौजूद थे।

मंडावा । भारत रंगों से भरा देश है,इसमें रंग भरते है | उसके भिन्न-भिन्न राज्य और उनकी संस्कृति हर राज्य की संस्कृति झलकती है उसकी, वेशभूषा से वहाँ के रित-रिवाजों से और त्यौहारों से हर राज्य की अपनीएक खासियत होती है, जिनमेत्यौहार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है | धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन पार्वती जी सोलह श्रृंगार करके सौभाग्यवती महिलाओं को अखंड सौभाग्य का आशीर्वाद देने के लिए निकली थी |इसलिए इस शुभ दिन के मौके पर सुहागिन महिलाएं भगवान् शिव के साथ पार्वती जी की पूजा कर उनसे अपने सुहाग की रक्षा की कामना करती है। इस अवसर पर पर भव्य शोभायात्रा निकाली गई |

चूरू। सब्जी मंडी स्थित पावटा कुवा पर शुक्रवार को परंपरागत गणगौर का भव्य मेला भरा। इस अवसर पर बड़ी संख्या में शहर की महिलाओं व युवतियों ने गणगौर माता की 16 दिन तक पूजन कर शुक्रवार को विदाई दी गई। मेले में महिलाओं ने अपने पारंपरिक पोशाक व पुरुषों ने साफा बांधकर गणगौर माता की सवारी निकाली|जो शहर की 5 गणगौर माता की सवारी गढ़ चौराहे से सामूहिक रूप से सफेद घंटाघर होते हुये मेला स्थल पहुंची। गौरतलब है कि गणगौर पर्व को लेकर महिलाओं ने प्रात: गणगौर - ईशर की पूजा अर्चना कर पावटा कुवा में विसर्जन किया गया। इस अवसर पर उप नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़, सभापति पायल सैनी सहित महानुभाव उपस्थित थे |

घर - घर में हुई कन्याओं की पूजा

मंडावा | चैत्रमास के शुक्ल पक्ष में मनाएं जाने वाले नवरात्री के तहत आज नवे दिन दुर्गा के रूप में माँ सिद्धिदात्री का विधिवत् पूजन कर दुर्गा नवमी का पर्व धूमधाम से मनाया गया | पर्व को लेकर घर – घर में कन्याओं की पूजा कर उन्हें पूर्ण श्रद्धापूर्वक भोजन करवाया गया | कन्याओं को भोजन के पश्चात् उन्हें दक्षिणा और उपहार भेटकर आशीर्वाद प्राप्त किया | इसी प्रकार पितरणी मंदिर में अरुण चोखानी के द्वारा चैत्र माह शुक्ल पक्ष की नवमी को नवरात्री पूजा कर कन्या भोजन के साथ अनुष्ठान नवरात्री के उपलक्ष में माँ दुर्गा जी का विधि विधान के साथ पूजा अर्चना की गई पूजन आचार्य पं. गौतम मिश्र मुकेश मिश्र के आचार्त्व में की गई नो दिन माँ दुर्गा पाठ आरती व माँ का श्रृंगार किया गया व प्रसाद लगा कर कन्याओं को भोजन करवाया |

शोक सम्वेदना

श्रीशारदा सदन पुस्तकालय, गौड़ ब्राह्मण महासभा, बड़ी गौड़ पंचायत (छ ॐ न्याती), शतरंज एसोसिएशन, साहित्य परिषद्, श्रीराम सांस्कृतिक परिषद् – पण्डित परिषद् एवंआध्यात्मिक उत्थान मण्डल के कार्यकर्ताओं ने सामाजिक कार्यकर्ता सुजानगढ़ निवासी श्री भंवरलाल शर्मा के निधन पर अपना गहरा दुःख एवं उनके परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हुये स्वर्गीय आत्मा को सविनय अपनी हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित की तथा परमपिता परमात्मा से उन्हें अपने श्री चरणारविन्द में स्थान देने की प्रार्थना की |

वे सौम्य, अत्यन्त मिलनसार एवं उदार समाजसेवी थे | सामाजिक कार्यों में उनका सक्रिय सहयोग सदैव रहता था | उनके निधन से समाज उनकी सेवा से सदा के लिए वंचित हो गया है | कार्यकर्ताओं ने उनकी आत्मा की शाश्वत शांति के लिए दो मिनट का मौन रख कर उनके परिवार को यह असह्य दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिए प्रभु स्मरण किया |

।।हरि ॐ तत्सत् ।।

सम्पादक,प्रकाशक,मुद्रकः शशिकान्त जोशी, जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ़ (सीकर) राजस्थान | कृष्णा प्रिन्टर्स के लिये सागर कम्प्यूटर, जयपुर द्वारा मुद्रित | प्रबन्ध सम्पादक- डॉ. महेन्द्रआचार्य, समाचार सम्पादक- भानुप्रकाश जोशी
शेखावाटी सन्मार्ग को online पढ़ने के लिये www.srrividya.com वेब साईट विजिटकरें |